अष्टमः पाठः

सुभाषितानि

पद्यांश :—

अलसस्य कुतो विद्या ? अविद्यस्य कुतो धनम् ?

अधनस्य कुतो मित्रम्? अमित्रस्य कुतः सुखम् ?।।1।।

शब्दार्थ :— अलसस्य— आलसी को ; कुतो —कहॉ ; अविद्यस्य— विद्या के बिना ; अधनस्य —धन के बिना ; अमित्रस्य — मित्र के बिना।

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठय पुस्तक संस्कृत पुस्तक —8 में सें अष्टम् पाठ सुभाषितानि में सें ली गईं हैं।इसमें कवि ने आलस्य ना करने के बारे में बताया है।उद्यम से काम करने के बारे में बताया गया है।

सरलार्थ :— आलसी को विद्या कहॉ ? विद्या के बिना धन कहॉ ? धन के बिना मित्र कहॉ ? मित्र के बिना सुख कहॉ ?

प्रथमे ना अर्जिता विद्या द्वितीय ना अर्जितम् धनम्।

तृतीय ना अर्जितम् धनम् चतुर्थे किम् करिष्यति ।।2।।

शब्दार्थः— प्रथमे— पहली अवस्थ में बचपन में ;ना —नहीं ;अर्जिता — कमाया ;द्वितीय— दूसरी अवस्था में यौवन में।

तृतीय —तीसरी अवस्था में अधेड अवस्था में ; चतुर्थे —चौथी अवस्था में ;किम् —क्या ; करिष्यति— करेगा;

प्रसंग :— प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठय पुस्तक संस्कृत पुस्तक —8 में से अष्टम् पाठ सुभाषितानि में से ली गईं है।इस में बताया गया है कि जिस व्यक्ति ने सारी उमर काम नहीं किया वह वुढापे में क्या करेगा?

सरलार्थ :—पहली अवस्था अर्थात् पचीस साल तक जिस व्यक्ति ने विद्या नहीं प्राप्त की।दूसरी अवस्था अर्थात् पचास साल तक जिस व्यक्ति नें धन नहीं प्राप्त किया।तीसरी अवस्था पंजतर साल तक जिस व्यक्ति नें पुण्य नहीं प्राप्त किया।वह चौथी अवस्था में क्या करेगा?

नमन्ति सफला वृक्षाः,नमन्ति सगुणा जनाः।

शुष्का वृक्षाः च मूर्खाः च न नमन्ति कदाचन्।।3।।

शब्दार्थ :—नमन्ति— झुकते ;सफला— फल वाले ; वृक्षाः —पेड़ ;सगुणा— गुण वाले ; जना —लोग ; शुष्का—सूखे ;मूर्खा —मुर्खाः ;कदाचन —कभी नहीं।

प्रसंग— प्रस्तुत पंक्तियॉ हमारी पाठय पुस्तक संस्कृत पुस्तक —8 में से पाठ अष्टम् सुभाषितानि में से ली गईं है।इस में गुणी व्यक्ति के बारे में बताया गया है।कि वह अकड़ते नहीं थोड़ा झुक जातें है।

सरलार्थ :—फल वाले वृक्ष झुकतें है।गुणी लोग झुकतें है। सूखे वृक्ष और मूर्ख कभी नही झूकते।कहने का भाव है कि गुणी व्यक्ति अकड़ कर बातें नही करते वह झुकना भी जानते है,जिस प्रकारु फल वाले वृक्ष फलों के भार के कारण झुक जातें है परन्तु सूखे वृक्ष खीचनें पर टूट जातें है पर झुकते नहीं।

prepared by Seema Sanskrit Mistress.